शारजाह-दुबई। शारजाह चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ में आयोजित ग्लोबल लीडरशिप कॉन्फ्रेन्स एंड मिडल ईस्ट एक्सीलेंस अवार्ड-2016 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी को मिला ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड-2016, जिसे प्राप्त करते हुए ब्र.कु. ज्योतिका।

मॉस्को-रशिया। सिविक चेम्बर ऑफ द रशियन फेडरेशन में 'सेफ्टी एंड प्रेवेन्शन ऑफ चिल्ड्रेन्स रोड ट्रैफिक इंजुरीज़' विषयक कॉन्फ्रेन्स को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुधा,डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज़,सेंटर फॉर स्पीरिच्युअल डेवलपमेंट।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। प्रभु उपहार रिट्रीट सेंटर में नवनिर्मित 'ज्ञान निधि भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन तथा ब्र.कु.आशा,गुरुग्राम। साथ हैं अन्य ब्र.कु. बहनें।

जयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू के शांतिवन परिसर के मुख्य अभियंता ब्र.कु. भरत को समाज में उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों के लिए जयपुर आमेर में संस्कृति युवा संस्थान की ओर से आयोजित समारोह में 'राजस्थान गौरव अवॉर्ड' से सम्मानित करते हुए पूर्व राज्यपाल बी.एल. जोशी, पूर्व राजमाता पद्मिनी देवी, संस्था के प्रधान संरक्षक लोकेन्द्र कानलवी, एच.सी. गणेशिया, चित्रा गोयल, पं. सुरेश मिश्रा तथा अन्य।

दिल्ली-सिरी फोर्ट। ब्रह्माकुमारीज़ दिल्ली आई.टी. विंग तथा सिरी फोर्ट सेवाकेन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली ज़ोन के बी.के. आई.टी. टीम प्रोफेशनल्स के लिए कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में तन्मय चक्रवर्ती,ग्लोबल हेड,गवर्नमेंट इंडस्ट्री सोल्यूशन यूनिट,टी.सी.एस., ब्र.कु. संजीव गुप्ता,आई.टी. विंग कोऑर्डिनेटर,नॉर्दन इंडिया, ब्र.कु. रमा, अनिता बहन,एच.सी.एल. तथा अन्य।

वस्ती-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं डी.एम. नरेन्द्र सिंह पटेल, एस.पी. कृपाशंकर सिंह, डी.आई.जी. लक्ष्मीनारायण, रानी आशिमा सिंह, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

कुदरती रचना के क्रमानुसार परिवर्तन अति सहज

गतांक से आगे...

जिस प्रकार मनुष्यात्माएँ रात को सारा कर्म समेटकर के सो जाती हैं, ठीक इसी प्रकार आत्मायें कल्प के अंत में अर्थात, कलियुग जब पूरा होता है, तो उस समय परमधाम जाती हैं। आत्मा, परमात्मा जैसे स्वरूप अर्थात् प्राकृति को प्राप्त करती है। अर्थात् उस स्वरूप में जाकर कुछ क्षण के लिए परमधाम में विश्राम करती है। फिर कल्प का आरंभ होता है, अर्थात् सुबह होती है, या सतयुग का प्रारंभ होता है। उस समय पुन:- वह दैवी संस्कारों में प्रवेश पाती है। प्रवेश पाकर के जैसे नये सिरे से अपना पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाती है।

सतयुग का समय है ही - संपूर्ण सत्यता का समय। जहाँ किसी भी प्रकार की असत्यता का नामो निशान नहीं है। जैसे सुबह के समय जब लालिमा होती है, प्राय: यह कितना श्रेष्ठ समय होता है। सुबह-सुबह के समय में किसी को बुरा कार्य करने की प्रेरणा नहीं होती है। रात्रि के समय में बुरा कर्म होता है संसार में। सुबह के समय में किसी के मन में भी बुरी भावनायें नहीं होती हैं। ठीक इसी तरह जब सतयुग का समय होता है, उस समय हर आत्मा के दैवी संस्कार जागृत होते हैं, उसमें वो प्रवेश पाते हैं। सारी दुनिया में सत्यता का सम्पूर्ण समय हो जाता है। इस तरह कल्प का आरंभ होता है। यह वो पहला पहर आरंभ होता है जबकि आत्माएं ईश्वर के समान भाव को प्राप्त हो जाती हैं। वहीं जब कलियुग का अंत आता है, तो उस समय एक वैराग्य आता है। आज दुनिया में जिस प्रकार के कृत्य हो रहे हैं, ये कृत्य मनुष्य में कौन सी भावना को जागृत कर रहे हैं? दिन प्रतिदिन इस संसार के प्रति विरक्ति और वैराग्य का भाव उत्पन्न हो रहा है कि ऐसी दुनिया कब तक चलेगी। हरेक के अंदर एक वैराग्य वृत्ति जागृत होती है। ये वैराग्य और विद्रोह की वृत्ति जो है, ये परमात्मा के समान भाव को पैदा करती है। वहीं कल्प का अंत है। जिसमें शरीरों का परिवर्तन, काल का परिवर्तन, युग का परिवर्तन निश्चित है। इस तरह से यह समय परिवर्तन का चक्र है। कलियुग से सतयुग का युग परिवर्तन से हरेक के शरीरों का भी परिवर्तन हो जाता है। कलियुगी तमोप्रधान प्रकृति का बना हुआ शरीर ही परिवर्तित होकर के, सतयुगी सतोप्रधान प्रकृति के आधार पर हम दैवी शरीर को प्राप्त करते हैं। उस दुनिया में जाने के लिए हम स्वयं पात्र बनते हैं।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कई बार कई लोग सोचते हैं कि इतना घोर पापाचार का युग कलियुग है, यह सतयुग में कैसे बदल जायेगा। कोई मनुष्य का काम नहीं है इसको बदलना। जिस प्रकार घोर अंधेरी अमावस्या की रात सुनहरी सुबह में अपने आप परिवर्तित हो जाती है। ये संसार का चक्र ही ऐसा है जो घोर अंधेरी रात भी सुनहरी सुबह में कब बदल जाती है, पता ही नहीं चलता है। कोई सारी रात भी बैठ जाये देखने के लिए कि सुबह कैसे आती है मैं देखूँ, लेकिन भोर कब हो जाती है यह पता ही नहीं चलता है।

ये कुदरत की रचना में ऐसा क्रम बना हुआ है कि वो परिवर्तन उत्तरोत्तर सहज रूप से होने लगता है कि मनुष्य समझ नहीं पाता है। ठीक इसी प्रकार, घोर पापाचार की दुनिया कलियुग को भी चाहे वो या न चाहे, सतयुग में परिवर्तन होना ही है। पूर्व में परिवर्तन के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। आज चारो ओर मनुष्य की मनोवृत्ति अति की ओर जा रही है। कोई भी चीज़ जब अपने अति की ओर जाती है तो अति की निशानी है उसका अंत और अंत ही निशानी है नये प्रारंभ की। क्योंकि ये चक्र है। इसीलिए सारे लक्षण स्पष्ट कर रहे हैं कि किस प्रकार इस संसार का परिवर्तन होता जा रहा है। मनुष्यात्माओं में भी उनकी मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन कितना तीव्र गति से हो रहा है। आज विदेशों में देखो तो छोटे-छोटे बच्चों की भी मानसिकता में कितनी विकृति आ गयी है। तो ये दर्शाता है कि कलियुग अब अपनी अति में पहुंच चुका है। जब भी कोई स्थिति की अति हो जाती है, तो अति की निशानी है अंत। अंत निशानी है, नयी शुरूआत की। तो समय परिवर्तन बहुत तीव्र गति से हो रहा है।

- क्रमश:

आओ जुड़ें इस भागीरथी...

- पेज 2 का शेष

चाहते हैं कि अगर हम आज सारी समस्याओं की जड़ में जाएं तो पता चलता है कि मनुष्य के मन में आई अपवित्रता ही समस्याओं का मूल कारण है। अब मनुष्य के मन को पवित्र बनाने का भगीरथ कार्य सिवाए परमात्मा शिव के और कोई कर नहीं सकता। शिव का अर्थ ही है कल्याणकारी। तो ये बेहद का कल्याणकारी कार्य उनके सृष्टि पर आगमन से ही संभव होता है। हम आपको ये खुशखबरी सुनाते हैं कि ब्रह्माकुमारी संस्थान 81वीं शिव जयन्ति मना रहा है। अर्थात् शिव परमात्मा के इस धरती पर आकर श्रेष्ठ कार्य करते हुए अस्सी वर्ष पूरे हुए। इन अस्सी वर्षों में लाखों आत्माओं ने परमात्मा के श्रीमत अनुसार अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया और सभी आत्माओं के लिए भी श्रेष्ठ जीवन जीने के आदर्श बने। तो आओ, आप भी परमात्मा शिव से मिलन मनाकर अपना जीवन सुख शांति से भरपूर करो और उस परमानंद की अनुभूति करो। अब नहीं तो कब नहीं...।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ के बिज़नेस विंग द्वारा आयोजित 'सक्सेस इन बिज़नेस एंड इंडस्ट्री बाई स्पीरिच्युअलिटी' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. रुक्मणि,मा.आबू., ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

जयपुर-बनीपार्क। मानसिंह होटल में ओ.एन.जी.सी. वुमेन ऑफिसर्स कॉन्फ्रेन्स में 'पीस एंड हैप्पीनेस' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. अनामिका।

ख़्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी जीने के दो तरीके होते हैं,
पहला: जो पसंद है उसे हासिल करना सीख लो।
दूसरा: जो हासिल है उसे पसंद करना सीख लो।

जीवन में कभी समझौता करना पड़े तो कोई बड़ी बात नहीं है,
झुकता वही है जिसमें जान होती है, अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है।

मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके उतना नहीं थकता,
जितना क्रोध और चिंता से एक क्षण में थक जाता है।